सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अ'राफ़

बुलंदियाँ

पूरा सफ़र — वो अह्द जो हर रूह ने किया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 7 • 206 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या बनी आदम ख़ुज़ू ज़ीनतकुम 'इन्द कुल्लि मस्जिदिन
31. ऐ आदम की औलाद, हर नमाज़ की जगह पर अपनी ज़ीनत ले कर आओ।

व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू; इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन
31. और खाओ और पियो, मगर हद से मत बढ़ो; बेशक वो हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

उद्'ऊ रब्बकुम तज़र्रु'अंव्-व ख़ुफ़्यह
55. अपने रब को आजिज़ी से और चुपके से पुकारो।

इन्न रहमतल्-लाहि क़रीबुम्-मिनल्-मुह्सिनीन
56. बेशक अल्लाह की रहमत नेकी करने वालों के क़रीब है।

अ लस्तु बि-रब्बिकुम; क़ालू बला शहिद्ना
172. क्या मैं तुम्हारा रब नहीं? उन्होंने कहा: क्यों नहीं, हम गवाह हैं।

ख़ुज़िल्-'अफ़्व वअ्मुर बिल्-'उर्फ़ि व अअ्रिज़ 'अनिल्-जाहिलीन
199. जो आसान हो वो लो, अच्छाई का हुक्म दो, और जाहिलों से मुँह मोड़ लो।

तोलना, और पहला इनकार

बेटा, ये एक लंबी सूरह है, और ये आपको पूरी इंसानी नस्ल की कहानी में से गुज़ारती है — आसमानों में पहले सजदे से ले कर उस दिन तक जब तराज़ू क़ायम की जाएगी।

ये रसूल ﷺ से ये कहते हुए खुलती है कि इस किताब से अपना सीना तंग न करें, और फिर आपके सामने एक मंज़र रख देती है:

'**वल्-वज़्नु यौम-इज़िनिल्-हक़्क़** — **और उस दिन तोलना हक़ होगा** — **फ़-मन सक़ुलत मवाज़ीनुहू फ़-उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — तो जिनके पलड़े **भारी** होंगे, वही कामयाब हैं — **व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़-उलाइकल्-लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम** — और जिनके पलड़े **हल्के** होंगे — **वही हैं जिन्होंने अपने आप को खो**

दिया।'

बेटा, नाकामी के लिए इस्तेमाल हुआ जुमला ग़ौर कीजिए: 'ख़सिरू **अन्फ़ुसहुम**' — **उन्होंने ख़ुद को खोया।** अपना माल नहीं, अपना मौक़ा नहीं। **अपनी ही जान।**

और फिर सूरह शुरू की तरफ़ लौटती है: आदम को सजदे का हुक्म, और इब्लीस का इनकार — '**अना ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन तीन**', वही माद्दे की दलील जो हम पहले देख चुके।

और फिर उसका मंसूबा उस अंदाज़ में बयान हुआ जो सिर्फ़ यहाँ मिलता है: '**सुम्म ल-आतियन्नहुम मिम्-बैनि ऐदीहिम व मिन ख़ल्फ़िहिम व 'अन ऐमानिहिम व 'अन शमा-इलिहिम — फिर मैं उन के पास उनके आगे से और उनके पीछे से, और उनकी दाहिनी तरफ़ से और उनकी बाईं तरफ़ से आऊँगा — व ला तजिदु अक्सरहुम शाकिरीन — और तू उन में से ज़्यादा तर को शुक्र-गुज़ार न पाएगा।**'

बेटा, हमले की चार सिम्तें। उलमा ने समझाया: **आगे से** — उन्हें आख़िरत के बारे में शक में डाल कर; **पीछे से** — उन्हें इस दुनिया का लालची बना कर; **दाहिनी तरफ़ से** — उन्हें दीन के मामलात में उलझा कर; **बाईं तरफ़ से** — गुनाह को ख़ूबसूरत बना कर।

और ग़ौर कीजिए वो उन से क्या छीनना चाहता है: **शुक्र।** यही उसका निशाना है — 'तू उन में से ज़्यादा तर को **शुक्र-गुज़ार** न पाएगा'। बेटा, **तो एक शुक्र-गुज़ार शख़्स वो है जो उस से बच निकला।**

और उलमा ने एक ख़ूबसूरत बात ग़ौर की: **उसने ये नहीं कहा 'उनके ऊपर से या उनके नीचे से' — क्योंकि ऊपर से अल्लाह की रहमत आती है, और नीचे वो जगह है जहाँ एक बंदा सजदा करता है।**

आदम, और दो क़िस्म के लिबास

आदम और उनकी बीवी को जन्नत में रखा गया, और कहा गया कि खुले आम खाओ सिवाए एक दरख़्त के। और शैतान ने उन्हें वसवसा दिया: '**मा नहाकुमा रब्बुकुमा 'अन हाज़िहिश्-शजरति इल्ला अन तकूना मलकैनि औ तकूना मिनल्-**

ख़ालिदीन — तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ़ इस लिए रोका कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ, या **हमेशा रहने वालों** में से न हो जाओ — **व क़ासमहुमा इन्नी लकुमा ल-मिनन्-नासिहीन — और उसने उन दोनों से क़सम खाई: बेशक मैं तुम्हारा ख़ैर-ख़्वाह हूँ।'**

बेटा, दो बातें ग़ौर कीजिए। **उसने हमेशगी की पेश-कश की — यही हमेशा उसका माल होता है। और उसने क़सम खाई कि वो ख़ालिस मशवरा दे रहा है।**

बेटा, **एक झूठा जो क़सम खा ले उस से ज़्यादा ख़तरनाक है जो न खाए**, और ये उस क़िस्म की तारीख़ की पहली क़सम थी।

'**फ़-दल्लाहुमा बि-ग़ुरूर — तो उसने उन्हें धोके से गिरा दिया — फ़-लम्मा ज़ाक़श्-शजरत बदत लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि 'अलैहिमा मिंव्-वरक़िल्-जन्नह** — और जब उन्होंने उस दरख़्त का मज़ा चखा, उनके जिस्म के छुपाने वाले हिस्से उन पर ज़ाहिर हो गए, और वो जन्नत के पत्तों से अपने ऊपर ढाँकने लगे।'

बेटा, **पहले गुनाह का पहला नतीजा शर्म था, और पहला जज़्बा ढाँकना था।**

और उनकी तौबह, बेटा, हर उस इंसान की दुआ है जिस से कभी फिसला हो: '**रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ुसना व इल्-लम् तग़्फ़िर लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्न मिनल्-ख़ासिरीन — हमारे रब, हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर घाटे वालों में से हो जाएँगे।**'

बेटा, इसे इब्लीस के जवाब से मिलाइए जब वो ग़लत पर था। **इब्लीस ने बहस की और इल्ज़ाम लगाया; आदम ने इक़रार किया और माँगा।** वही सूरत-ए-हाल, दो जवाब — और उन से दो बिल्कुल मुख़्तलिफ़ अंजाम निकले। **यही वो इंतेख़ाब है जो आप हर बार करते हैं जब आप से फिसला होता है।**

और फिर, बेटा, अल्लाह हम सब को मुख़ातिब करते हैं:

'**या बनी आदम क़द अन्ज़ल्ना 'अलैकुम लिबासंय्युवारी सौआतिकुम व रीशा — ऐ आदम की औलाद, हमने तुम पर एक लिबास उतारा जो तुम्हें ढाँपे और ज़ीनत भी हो — व लिबासुत्-तक़्वा ज़ालिक ख़ैर — मगर तक़वा का लिबास — वही बेहतर है।**'

बेटा, दो लिबासों का नाम लिया गया। **बाहरी लिबास जिस्म को ढाँकता है। अंदरूनी — 'लिबासुत्-तक़्वा' — रूह को ढाँकता है। और एक शख़्स पहले में बिल्कुल मुकम्मल पहना हुआ हो सकता है और दूसरे में बिल्कुल नंगा।**

'या बनी आदम ला यफ़्तिनन्नकुमुश्-शैतानु कमा अख़्रज अबवैकुम मिनल्-जन्नति यन्ज़ि'उ 'अन्हुमा लिबासहुमा — ऐ आदम की औलाद, **शैतान तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उन से उनका लिबास उतरवा कर — इन्नहू यराकुम हुव व क़बीलुहू मिन हैसु ला तरौनहुम — बेशक, वो और उसका गिरोह तुम्हें वहाँ से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते।'**

बेटा, इसी लिए ये लड़ाई एक सिम्त में ना-बराबर है — **वो आपको देखता है और आप उसे नहीं।** और ठीक इसी लिए **आपकी हिफ़ाज़त होशियारी नहीं बल्कि उस ज़ात की पनाह लेना है जो उसे देखता है।**

अपनी ज़ीनत ले कर आओ, और हद से मत बढ़ो

और फिर, बेटा, एक आयत जिसे बाज़ उलमा ने तिब्ब और अच्छी ज़िंदगी की बुनियाद कहा:

'या बनी आदम ख़ुज़ू ज़ीनतकुम 'इन्द कुल्लि मस्जिदिन — ऐ आदम की औलाद, हर नमाज़ की जगह पर अपनी ज़ीनत ले कर आओ — व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू — और खाओ और पियो, मगर हद से मत बढ़ो — इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन — बेशक, वो हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।'

बेटा, एक लाइन में तीन हिदायात।

'ख़ुज़ू ज़ीनतकुम 'इन्द कुल्लि मस्जिद' — **नमाज़ के लिए अच्छे कपड़े पहनो।** उस दौर के लोग का'बा का तवाफ़ बे-लिबास कर लेते और उसे दीनदारी समझते थे। और इस्लाम ने कहा: अल्लाह के घर में ठीक लिबास में आओ। बेटा, **हम कभी शादी के लिए एहतियात से तैयार होते हैं और मस्जिद में जो सामने हो वही पहन कर चले जाते हैं। ये आयत इस को उलट देती है।**

'वा कुलू वश्रबू' — **खाओ और पियो।** बेटा, ग़ौर कीजिए: **लुत्फ़ की इजाज़त है, बल्कि**

हुक्म है। ये महरूमी का दीन नहीं।

'**व ला तुस्रिफ़ू**' — मगर हद से मत बढ़ो। और रिवायत है कि इस आधी आयत के बारे में कहा गया कि इस में पूरा तिब्ब (मेडिसिन) समा गया: **फ़रावानी की बीमारियाँ इसी लकीर को पार करने से आती हैं।**

और फिर सूरह एक ऐसा सवाल पूछती है जो हलाल का मामला तय कर देता है: '**क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्-लाहिल्-लती अख़्रज लि-'इबादिही वत्-तय्यिबाति मिनर्-रिज़्क़** — **कहो: किसने अल्लाह की उस ज़ीनत को हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाली, और रिज़्क़ की पाक चीज़ों को?**'

बेटा, **इस दीन में अस्ल चीज़ इजाज़त है। जो अल्लाह ने अच्छा और ख़ूबसूरत बनाया वो आपके लिए बनाया। सिर्फ़ वही हराम है जिसे उसने ख़ास तौर पर हराम किया — और किसी को हक़ नहीं कि उस फ़ेहरिस्त में इज़ाफ़ा करे।**

'**क़ुल इन्नमा हर्रम रब्बियल्-फ़वाहिश मा ज़हर मिन्हा व मा बतन** — कहो: मेरे रब ने सिर्फ़ बे-हयाई को हराम किया, उसका ज़ाहिर भी और उसका छुपा भी — **वल्-इस्म वल्-बग़्य बि-ग़ैरिल्-हक़्क़** — और गुनाह, और ना-हक़ ज़्यादती — **व अन तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम युनज़्ज़िल बिही सुल्तानंव्** — और ये कि तुम अल्लाह के साथ उस चीज़ को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील न उतारी — **व अन तक़ूलू 'अलल्-लाहि मा ला तअ्लमून** — **और ये कि तुम अल्लाह के बारे में वो कहो जो तुम नहीं जानते।**'

बेटा, वो आख़िरी बात ग़ौर कीजिए, जो उसी फ़ेहरिस्त में शिर्क और ज़ुल्म के साथ रखी गई: **अल्लाह के बारे में बिना इल्म के बोलना।** 'अल्लाह कहते हैं' या 'ये हराम है' या 'अल्लाह उस शख़्स को नहीं बख़्शेंगे' — बिना इल्म के।

उसे आजिज़ी से और चुपके से पुकारो

फिर सूरह तख़्लीक़ और रात-दिन के आने जाने का बयान करती है, और दुआ के बारे में हिदायात देती है, बेटा — और ये हिस्सा क़ीमती है:

'**उद्'ऊ रब्बकुम तज़र्रु'अंव्-व ख़ुफ़्यह** — **अपने रब को आजिज़ी से और चुपके से**

पुकारो — **इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुअ्तदीन** — बेशक, वो हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।'

बेटा, दुआ की दो शर्तें: '**तज़र्रु**' — आजिज़ी, गिड़गिड़ाना, एक माँगने वाले की हालत; और '**ख़ुफ़्यह**' — **चुपके से**, निजी तौर पर, किसी और के सुनने के लिए नहीं।

बेटा, **दुआ की ऊँची आवाज़ उस में कुछ इज़ाफ़ा नहीं करती। आप किसी दूर के शख़्स को नहीं पुकार रहे।**

'**व ला तुफ़्सिदू फ़िल्-अर्ज़ि ब'अ्द इस्लाहिहा** — और ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद फ़साद मत करो — **वद्'ऊहु ख़ौफ़ंव्-व तम'आ** — **और उसे ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारो** — **इन्न रहमतल्-लाहि क़रीबुम्-मिनल्-मुह्सिनीन** — **बेशक, अल्लाह की रहमत नेकी करने वालों के क़रीब है।**'

बेटा, 'क़रीबुम्-मिनल्-मुह्सिनीन' — उनकी रहमत नेकी करने वालों के **क़रीब** है। बेटा, वो जुमला आपको इह्सान की तरफ़ खींचना चाहिए: **रहमत बे-तरतीब बाँटी नहीं जाती; वो एक ख़ास क़िस्म के शख़्स के पास खड़ी होती है।**

और फिर एक ख़ूबसूरत निशानी, बेटा: '**व हुवल्-लज़ी युर्सिलुर्-रियाह बुश्रम्-बैन यदै रहमतिह** — और वही है जो हवाओं को **अपनी रहमत से पहले** ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है — **हत्ता इज़ा अक़ल्लत सहाबन सिक़ालन सुक़्नाहु लि-बलदिम्-मय्यितिन फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्-मा-अ फ़-अख़्रज्ना बिही मिन कुल्लिस्-समरात** — यहाँ तक कि जब वो भारी बादल उठा लेती हैं, **हम उन्हें एक मुर्दा ज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं** और उस से पानी उतारते हैं और हर क़िस्म के फल निकालते हैं — **कज़ालिक नुख़्रिजुल्-मौता ल'अल्लकुम तज़क्करून** — **इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे; शायद तुम नसीहत पकड़ो।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए हवा को '**उसकी रहमत से पहले की ख़ुशख़बरी**' कहा गया — वो ठंडी हवा जो बारिश से पहले आती है किसी चीज़ का एलान कर रही होती है। और ख़ुद बारिश को **रहमत** कहा गया।

'**वल्-बलदुत्-तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बि-इज़्नि रब्बिह** — **और अच्छी ज़मीन — उसका सब्ज़ा अपने रब के इज़्न से निकलता है** — **वल्-लज़ी ख़बुस ला यख़्रुजु**

इल्ला नकिदा — मगर जो ख़राब है — उस से कुछ नहीं निकलता सिवाए थोड़े से, मुश्किल से।'

बेटा, फिर वही बारिश, दो ज़मीनें। ये सूरह और अर-र'अद दोनों इस नुक़्ते पर लौटती हैं, क्योंकि **यही पूरा सवाल है कि वही एक हिदायत मुख़्तलिफ़ लोग क्यों बनाती है।**

तुम से पहले की क़ौमें

फिर सूरह रसूलों का सिलसिला सुनाती है, बेटा — नूह, हूद, सालेह, लूत, शुऐब — और हर बयान में सँभाल कर रखने लायक़ कुछ है।

नूह (अलैहि0) ने कहा: '**इन्नी अख़ाफ़ु 'अलैकुम 'अज़ाब यौमिन 'अज़ीम**' — मुझे तुम्हारे लिए एक अज़ीम दिन के अज़ाब का डर है। और उन्होंने उन्हें गुमराह कहा। और उन्होंने जवाब दिया: '**या क़ौमि लैस बी ज़लालतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्-रब्बिल्-'आलमीन** — ऐ मेरी क़ौम, मुझ में कोई गुमराही नहीं, बल्कि मैं जहानों के रब का रसूल हूँ — **उबल्लिग़ुकुम रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम** — **मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूँ** — **व अअ्लमु मिनल्-लाहि मा ला तअ्लमून** — और मैं अल्लाह की तरफ़ से वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'

बेटा, उनका अपना बयान ग़ौर कीजिए: '**मैं तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूँ।**' इन में से हर आदमी अपने आप को उन लोगों का **ख़ैर-ख़्वाह** समझता था जो उन्हें गाली दे रहे थे।

हूद (अलैहि0) से कहा गया: '**इन्ना ल-नराक फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नुक मिनल्-काज़िबीन** — हम तुम्हें **बेवक़ूफ़ी** में देखते हैं, और हम तुम्हें झूठों में से समझते हैं।' और उनका जवाब: '**या क़ौमि लैस बी सफ़ाहतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्-रब्बिल्-'आलमीन** — मुझ में कोई बेवक़ूफ़ी नहीं।'

बेटा, **पुर-सुकून इनकार, कोई गाली वापस नहीं। एक आदमी ऐसे ही जवाब देता है जब वो अपनी ज़मीन पर मज़बूत हो।**

सालेह (अलैहि0) और ऊँटनी; और उनके मुआशरे के बारे में आयत ग़ौर कीजिए:

'**क़ालल्-मल-उल्-लज़ीनस्-तक्बरू मिन क़ौमिही लिल्लज़ीनस्-तुज़्'इफ़ू लिमन आमन मिन्हुम** — **उसकी क़ौम के मुतकब्बिर सरदारों ने उन कमज़ोरों से कहा जो ईमान ले आए थे** — **अ तअ्लमून अन्न सालिहम्-मुर्सलुम्-मिर्-रब्बिह** — क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजा गया है? **क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल बिही मुअ्मिनून** — **उन्होंने कहा: बेशक हम उस पर ईमान रखते हैं जिस के साथ वो भेजा गया।**'

बेटा, इन तमाम मुआशरों में अंदाज़ ग़ौर कीजिए: **मुतकब्बिर सरदार इनकार करते हैं, और कमज़ोर ईमान लाते हैं।**

और शुऐब (अलैहि0), जिनकी क़ौम ने उन्हें निकालने की धमकी दी अगर वो उनके तरीक़ों पर न लौटें: '**क़दिफ़्-तरैना 'अलल्-लाहि कज़िबन इन 'उद्ना फ़ी मिल्लतिकुम ब'अ्द इज़ नज्जानल्-लाहु मिन्हा** — अगर हम तुम्हारे दीन में लौट आएँ उस के बाद कि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया, तो हम अल्लाह पर झूठ घढ़ने वाले होंगे — '**अलल्-लाहि तवक्कल्ना** — **हमने अल्लाह पर भरोसा किया** — **रब्बनफ़्-तह बैनना व बैन क़ौमिना बिल्-हक़्क़ि व अन्त ख़ैरुल्-फ़ातिहीन** — **हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दे, और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।**'

और फिर, बेटा, एक उसूल जो समझाता है कि बरकतें क्यों आती और जाती हैं: '**व लौ अन्न अह्ल्-क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़तह्ना 'अलैहिम बरकातिम्-मिनस्-समा-इ वल्-अर्ज़** — **और अगर बस्तियों वाले ईमान ले आते और अल्लाह से डरते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते** — **व लाकिन कज़्ज़बू फ़-अख़ज़्नाहुम बिमा कानू यक्सिबून** — मगर उन्होंने झुठलाया, तो हमने उन्हें उस पर पकड़ लिया जो वो कमा रहे थे।'

बेटा, यहाँ ईमान और तक़वा को **ऊपर से** और **नीचे से** बरकतें खोलने वाला बताया गया — आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार। **ख़ुश-हाली का एक रूहानी पहलू भी है जिसे दुनिया नापती नहीं।**

मूसा, और पहाड़

फिर सूरह मूसा (अलैहि0) का एक लंबा बयान देती है, बेटा, और उस में कई लम्हे थामे रखने लायक़ हैं।

जादूगर हार गए और सजदे में गिर पड़े, और फ़िरऔन ने उन्हें धमकाया। और उन्होंने कहा: '**रब्बना अफ़्रिग़ 'अलैना सब्रंव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन** — हमारे रब, **हम पर सब्र उंडेल दे**, और हमें मुसलमान हो कर मौत दे।'

और फिर फ़िरऔन की क़ौम पर आफ़तें आईं, और हर बार वो मूसा के पास आते कि उन्हें हटाने की दुआ करें, ईमान का वादा करते हुए — और हर बार राहत मिलते ही वादा तोड़ देते।

बेटा, उस अंदाज़ को याद रखिए। **मुसीबत के बीच में किए गए वादे दुनिया के सब से आसान वादे हैं, और सब से आसानी से भुला दिए जाते हैं।**

और बनी इस्राईल बचा लिए गए, और फिर — बेटा, ये हैरत-अंगेज़ है — उन्होंने समंदर पार किया, और एक ऐसी क़ौम को देखा जो बुतों में लगी हुई थी, और बोले: '**या मूसज्-'अल लना इलाहन कमा लहुम आलिहह — ऐ मूसा, हमारे लिए भी एक ख़ुदा बना दो जैसे उन के ख़ुदा हैं।**'

बेटा, **उन पर से पानी अभी सूखा भी न था।** और मूसा ने कहा: '**इन्नकुम क़ौमुन तज्हलून** — बेशक, तुम एक ना-दान क़ौम हो।'

फिर मूसा अपने रब के मुक़र्रर वादे पर चालीस रातों के लिए गए, और उन्होंने माँगा: '**रब्बि अरिनी अन्ज़ुर इलैक — मेरे रब, मुझे अपने आप को दिखा दे, ताकि मैं तुझे देख सकूँ।**'

'**क़ाल लन तरानी व लाकिनिज़्-ज़ुर इलल्-जबलि फ़-इनिस्-तक़र्र मकानहू फ़-सौफ़ तरानी — उसने कहा: तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, मगर उस पहाड़ की तरफ़ देख; अगर वो अपनी जगह पर क़ायम रहा तो तू मुझे देख लेगा।**'

'**फ़-लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल्-जबलि ज'अलहू दक्कंव्-व ख़र्र मूसा स'इक़ा — और जब उसके रब ने उस पहाड़ पर तजल्ली की, उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया, और मूसा बे-होश हो कर गिर पड़े।**'

बेटा, **एक पहाड़ — ठोस चट्टान — एक तजल्ली पर धूल बन गया। और एक नबी बे-होश हो कर गिर पड़े। ये उस चीज़ का पैमाना है जिस से हमारा वास्ता है जब हम लफ़्ज़ 'अल्लाह' कहते हैं।**

और जब उन्हें होश आया: '**सुब्हानक तुब्तु इलैक व अना अव्वलुल्-मुअ्मिनीन** — **तू पाक है! मैंने तेरी तरफ़ तौबह की, और मैं पहला मोमिन हूँ।**'

और फिर बछड़ा, बेटा, उनके पीछे — और उनका ग़ुस्से में लौटना, और अपने भाई का सर पकड़ना, और हारून की इल्तिजा। और मूसा की दुआ: '**रब्बिग़्-फ़िर ली व लि-अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रहमतिक व अन्त अर्हमुर्-राहिमीन** — मेरे रब, मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।'

और फिर, बेटा, वो दुआ जिस से क़ुरआन की अज़ीम तरीन आयतों में से एक निकली। मूसा ने माँगा: '**वक्तुब लना फ़ी हाज़िहिद्-दुन्या हसनतंव्-व फ़िल्-आख़िरह** — **और हमारे लिए इस दुनिया में भलाई लिख दे और आख़िरत में भी।**'

और अल्लाह ने जवाब दिया: "**अज़ाबी उसीबु बिही मन अशा** — **मेरा अज़ाब — मैं जिसे चाहूँ उस पर डालता हूँ** — **व रहमती वसि'अत कुल्ल शै** — **मगर मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेर रखा है।**'

बेटा, 'व रहमती वसि'अत **कुल्ल शै**" — **मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेर लिया है।** हर चीज़, बेटा। **वुजूद में ऐसा कुछ नहीं जो उस से बाहर हो।**

'**फ़-स-अक्तुबुहा लिल्लज़ीन यत्तक़ून व युअ्तूनज़्-ज़कात वल्-लज़ीन हुम बि-आयातिना युअ्मिनून** — तो मैं उसे ख़ास तौर पर उन के लिए लिखूँगा जो मुझ से डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।'

क्या मैं तुम्हारा रब नहीं?

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन के सब से गहरे हिस्सों में से एक — और ये आपके अपने बारे में वो चीज़ समझाता है जिसे आप हमेशा से आधा जानते थे।

'व इज़ अख़ज़ रब्बुक मिम्-बनी आदम मिन ज़ुहूरिहिम ज़ुर्रिय्यतहुम व अश्हदहुम 'अला अन्फ़ुसिहिम — और जब तेरे रब ने आदम की औलाद की पुश्तों से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह बनाया:'

'अ लस्तु बि-रब्बिकुम — क्या मैं तुम्हारा रब नहीं? — क़ालू बला शहिद्ना — उन्होंने कहा: क्यों नहीं, हम गवाह हैं।'

'अन तक़ूलू यौमल्-क़ियामति इन्ना कुन्ना 'अन हाज़ा ग़ाफ़िलीन — ताकि तुम क़ियामत के दिन ये न कहो: हम इस से बे-ख़बर थे।'

बेटा, **हर इंसानी रूह अपने रब के सामने लाई गई और उस से एक सवाल पूछा गया — और हम में से हर एक ने हाँ कहा।**

बेटा, और इसी लिए कोई ये न कह सकेगा कि 'मुझे कभी बताया ही न गया'। **गवाही ख़ुद रूह से ली गई, उस से पहले कि वो इस दुनिया में आई।**

और बेटा, ये उस चीज़ को समझाता है जो आपने महसूस की है। **एक इंसान दहशत के लम्हे में ख़ुदा को क्यों पुकार उठता है चाहे उसने पूरी ज़िंदगी उसका इनकार किया हो? दिल, अपनी सब से गहरी तह में, क्यों जानता है कि उसने ख़ुद को नहीं बनाया? क्योंकि एक वादा हुआ था, और आप में कुछ उसे याद रखता है।**

बेटा, वो फ़ितरत जिसके बारे में हमने सूरह अर-रूम में पढ़ा, वो यही है: **उस 'बला' — उस हाँ — का बचा हुआ निशान।**

और फिर, बेटा, इल्म बिना अमल के बारे में एक तंबीह, क़ुरआन की सब से परेशान-कुन मिसालों में से एक के तौर पर:

'वत्लु 'अलैहिम नब-अल्-लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्सलख़ मिन्हा — और उन्हें उस शख़्स की ख़बर सुनाओ जिसे **हमने अपनी आयतें दीं, मगर वो उन से निकल गया** — **फ़-अत्ब'अहुश्-शैतानु फ़-काना मिनल्-ग़ावीन** — तो शैतान उसके पीछे लगा, और वो भटकने वालों में से हो गया।'

बेटा, **'फ़न्सलख़ मिन्हा'** — वो उन से यूँ **निकल गया जैसे साँप अपनी केंचली से निकल जाता है।** उसके पास इल्म था और वो उस से बाहर क़दम रख कर उसे पीछे

छोड़ आया।

'**व लौ शिअ्ना ल-रफ़अ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्लद इलल्-अर्ज़ि वत्तब'अ हवाह** — और अगर हम चाहते तो उसे उन के ज़रिए बुलंद कर देते, **मगर वो ज़मीन से चिपक गया और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला।**'

बेटा, '**अख़्लद इलल्-अर्ज़ि** — वो ज़मीन से जुड़ गया, उस की तरफ़ झुक गया। **उसका इल्म उसे उठा सकता था और उसने नीचे ही रहना चुना।**

'**फ़-मसलुहू क-मसलिल्-कल्बि इन तह्मिल 'अलैहि यल्हस औ तत्रुक्हु यल्हस — तो उसकी मिसाल कुत्ते जैसी है: अगर तुम उसे धुत्कारो तो वो हाँपता है, और अगर छोड़ दो तो भी हाँपता है।**'

बेटा, ये एक तबाह-कुन तश्बीह है, और उसका मतलब बारीक है: **एक मुस्तक़िल, बे-चैन तलब जो कभी पूरी नहीं होती।** उसे दिया जाए या रोक लिया जाए, ख़बरदार किया जाए या छोड़ दिया जाए — हाँपना कभी नहीं रुकता। **यही उस शख़्स के साथ होता है जिसके पास इल्म हो और तक़वा न हो: उसे कभी कुछ नहीं भरता।**

बेटा, और ग़ौर कीजिए कि ये आयत ख़ास तौर पर **उन लोगों** के लिए तंबीह है जिन्हें इल्म दिया गया। **जितना ऊँचा चढ़ोगे, फिसलना उतना ही लंबा होगा।**

बुलंदियाँ

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को उसका नाम देता है।

उस दिन, एक पर्दा जन्नत वालों को आग वालों से अलग करेगा। और उसकी बुलंदियों पर — '**अल-अ'राफ़**' — कुछ आदमी होंगे।

'**व बैनहुमा हिजाब — और उन दोनों के दरमियान एक पर्दा होगा — व 'अलल्-अ'राफ़ि रिजालुंय्यअ्रिफ़ून कुल्लम्-बि-सीमाहुम — और बुलंदियों पर ऐसे आदमी होंगे जो हर एक को उसकी निशानी से पहचानते होंगे।**'

वो जन्नत वालों को पुकारेंगे: '**सलामुन 'अलैकुम**' — तुम पर सलाम हो — अभी उस में दाख़िल न हुए, मगर उस के मुश्ताक़। और जब उनकी नज़रें आग वालों की तरफ़

फेरी जाएँगी, वो कहेंगे: '**रब्बना ला तज्'अल्ना म'अल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन — हमारे रब, हमें ज़ालिम क़ौम के साथ मत करना।**'

बेटा, उलमा ने इस पर गुफ़्तगू की कि ये लोग कौन हैं, और सब से ज़्यादा मक़्बूल राय ये है कि उनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर थीं, और उन्हें कुछ वक़्त के लिए इस जगह रोका जाएगा, फिर अल्लाह उन्हें अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेंगे।

और सूरह दोनों तरफ़ की गुफ़्तगू दर्ज करती है: जन्नत वाले पुकारेंगे: '**क़द वजद्ना मा व'अदना रब्बुना हक़्क़न फ़-हल वजत्तुम मा व'अद रब्बुकुम हक़्क़ा — हमने अपने रब का वादा सचा पाया। क्या तुमने अपने रब का वादा सचा पाया?**' और वो कहेंगे: हाँ।

और आग वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे: '**अन अफ़ीज़ू 'अलैना मिनल्-मा-इ औ मिम्मा रज़क़कुमुल्-लाह — हम पर थोड़ा पानी उंडेल दो, या उस में से कुछ जो अल्लाह ने तुम्हें दिया।**' और जवाब: '**इन्नल्-लाह हर्रमहुमा 'अलल्-काफ़िरीन** — अल्लाह ने ये दोनों काफ़िरों पर हराम कर दिए।'

बेटा, **ये एक ऐसा मंज़र है जिसे एक गर्म दोपहर में याद रखना चाहिए जब आप ठंडे पानी का ग्लास बे-परवाही से उठाते हैं।**

वो उम्मी नबी

फिर सूरह नबी ﷺ का वो बयान देती है जैसा पहली किताबों में लिखा था, बेटा — और ये बयान याद कर लेने लायक़ है:

'**अल्लज़ीन यत्तबि'ऊनर्-रसूलन्-नबिय्यल्-उम्मिय्यल्-लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन 'इन्दहुम फ़ित्-तौराति वल्-इंजील — वो जो उस रसूल, उस उम्मी नबी की पैरवी करते हैं, जिसे वो अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं:**'

'**यअ्मुरुहुम बिल्-म'ऊफ़ि व यन्हाहुम 'अनिल्-मुन्कर — वो उन्हें अच्छाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है — व युहिल्लु लहुमुत्-तय्यिबाति व युहर्रिमु 'अलैहिमुल्-ख़बा-इस — और उन के लिए पाक चीज़ें हलाल करता और गंदी चीज़ें**

हराम करता है — व यज़'उ 'अन्हुम इस्रहुम वल्-अग़्लालल्-लती कानत 'अलैहिम — और उन से उनका बोझ और वो तौक़ उतार देता है जो उन पर थे।'

बेटा, वो आख़िरी जुमला देखिए: **वो बोझ उतारने और ज़ंजीरें तोड़ने आए।**

तो इस दीन की कोई भी ऐसी पेश-कश जो लोगों को पहले से ज़्यादा बोझल, ज़्यादा जकड़ा हुआ, ज़्यादा कुचला हुआ छोड़ दे, उसने उस आदमी के मिशन को ग़लत समझा जो इसे लाए।

'**फ़-अल्लज़ीन आमनू बिही व 'अज़्ज़रूहु व नसरूहु वत्तब'उन्-नूरल्-लज़ी उन्ज़िल म'अहू उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — तो जो उस पर ईमान लाए, उसकी इज़्ज़त की, उसकी मदद की, **और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया — वही कामयाब हैं।'**

जो आसान हो वो लो

और अब, बेटा, सूरह अपने इख़्तिताम की तरफ़ बढ़ती है किसी इंसान को दी गई तीन सब से अमली हिदायतों के साथ। उलमा ने कहा कि ये एक आयत पूरे हुस्न-ए-अख़्लाक़ को समेट लेती है:

'**ख़ुज़िल्-'अफ़्व — जो आसान हो वो लो**, जो बे-तकल्लुफ़ मिल जाए, और माफ़ कर दो — **वअ्मुर बिल्-'उर्फ़ — और अच्छाई का हुक्म दो**, जो मा'रूफ़ और पहचानी हुई भलाई है — **व अ्रिज़ 'अनिल्-जाहिलीन — और जाहिलों से मुँह मोड़ लो।'**

बेटा, हर एक को लीजिए।

'**ख़ुज़िल्-'अफ़्व**' — इस लफ़्ज़ में दोनों मानी हैं: **लोगों से जो आसानी से मिले वो क़ुबूल करो, उनकी इंतेहा का मुतालबा किए बग़ैर, और उनकी ग़लतियाँ माफ़ करो।** बेटा, **किसी से कमाल का मुतालबा मत कीजिए — न अपनी बीवी से, न अपने बच्चों से, न अपने मुलाज़िमों से, न अपने दोस्तों से। उन से जो आसानी से आए वो ले लीजिए।**

'**वअ्मुर बिल्-'उर्फ़**' — अच्छाई और पहचानी हुई भलाई का हुक्म दो। सख़्ती से नहीं;

"उर्फ़" वो है जिसे लोग पहले ही शरीफ़ाना मानते हैं।

'**व अ़्रिज़ 'अनिल्-जाहिलीन**' — जाहिलों से मुँह मोड़ लो। **उन्हें जवाब देना नहीं, उन्हें दुरुस्त करना नहीं, उन्हें हराना नहीं। मुँह मोड़ लो।**

बेटा, जब ये आयत उतरी, नबी ﷺ ने जिब्रील से इस के बारे में पूछा, और रिवायात में है कि जो तशरीह दी गई वो ये थी: **उस से जोड़ो जो तुम से काटे, उसे दो जो तुम्हें महरूम करे, और उसे माफ़ करो जो तुम पर ज़ुल्म करे।**

बेटा, अगर आप इस लंबी सूरह से और कुछ न लें, **ये एक आयत एक घराने को बदल देने के लिए काफ़ी है।**

और फिर, बेटा, उसके बाद वाली बात — क्योंकि मुँह मोड़ने का हुक्म मुश्किल है, और आपके अंदर कुछ इसे धकेलेगा:

'**व इम्मा यन्ज़ग़न्नक मिनश्-शैतानि नज़्ग़ुन फ़स्त'इज़ बिल्लाह — और अगर शैतान की तरफ़ से कोई उकसावा आ जाए, तो अल्लाह की पनाह माँगो — इन्नहू समी'उन 'अलीम** — बेशक, वो सुनने वाला, जानने वाला है।'

'**इन्नल्-लज़ीनत्-तक़ौ इज़ा मस्सहुम ताइफ़ुम्-मिनश्-शैतानि तज़क्करू फ़-इज़ा हुम मुब्सिरून — बेशक, जो अल्लाह से डरते हैं — जब उन्हें शैतान का कोई छोटा सा असर छूता है, वो याद करते हैं, और फ़ौरन उन्हें नज़र आने लगता है।**'

बेटा, एक नेक शख़्स का ये बयान देखिए। **वो वसवसे से महफ़ूज़ नहीं** — 'जब उन्हें एक छू छूता है'। फ़र्क़ वो है जो उस के बाद होता है: '**तज़क्करू**' — वो **याद** करते हैं — '**फ़-इज़ा हुम मुब्सिरून**' — और फ़ौरन उन्हें **दिखाई** देने लगता है।

बेटा, **पूरा हुनर यही है: कभी आज़माइश में न आना नहीं, बल्कि ख़ुद को जल्दी पकड़ लेना। वसवसे और याद आने के दरमियान का फ़ासला — आप उसी की तर्बियत कर रहे हैं।**

और सूरह इस किताब के बारे में एक हुक्म पर ख़त्म होती है: '**व इज़ा क़ुरिअल्-क़ुरआनु फ़स्तमि'ऊ लहू व अन्सितू ल'अल्लकुम तुर्हमून — और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाए।**'

और आख़िरी आयत, बेटा, सजदे वाली है: **'इन्नल्-लज़ीन 'इन्द रब्बिक ला यस्तक्बिरून 'अन 'इबादतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून — बेशक, जो तेरे रब के पास हैं उन्हें उसकी इबादत से ग़ुरूर नहीं रोकता, और वो उसकी तस्बीह करते हैं, और उसी को सजदा करते हैं।'**

बेटा, और इस सूरह का दायरा देखिए। **ये एक ऐसी मख़्लूक़ से शुरू हुई जिसने ग़ुरूर से सजदे का इनकार किया। ये उन लोगों पर ख़त्म होती है जो अल्लाह के सब से क़रीब हैं, जिन में ग़ुरूर बिल्कुल नहीं, सजदे में।**

इन दो नुक़्तों के दरमियान पूरी इंसानी तारीख़ है — **और आपकी अपनी ज़िंदगी भी उसी लकीर पर कहीं है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. शैतान चार सिम्तों से हमला करता है, और उसका बयान किया गया निशाना तुम्हारा शुक्र है — तो एक शुक्र-गुज़ार शख़्स उस से बच निकला।

2. इब्लीस ने बहस की और इल्ज़ाम लगाया; आदम ने इक़रार किया और माँगा। वही फिसलना, दो अंजाम।

3. एक बाहरी लिबास है और एक 'लिबासुत्-तक़्वा' — एक शख़्स पूरी तरह पहना हुआ और बिल्कुल नंगा हो सकता है।

4. नमाज़ के लिए अच्छा पहनो, खाओ और पियो — मगर हद से मत बढ़ो; और अल्लाह के बारे में कभी वो मत कहो जो तुम नहीं जानते।

5. उसे आजिज़ी से और चुपके से पुकारो — तुम किसी दूर के शख़्स से बात नहीं कर रहे; और उसकी रहमत नेकी करने वालों के पास खड़ी है।

6. हर रूह ने यहाँ आने से पहले 'बला' कहा था — इसी लिए कोई ना-वाक़फ़ियत का उज़्र नहीं कर सकता, और इसी लिए दिल अब भी याद रखता है।

7. 'ख़ुज़िल्-'अफ़्व वअ्मुर बिल्-'उर्फ़ि व अअ्रिज़ 'अनिल्-जाहिलीन' — जो आसानी से मिले वो लो, भलाई का हुक्म दो, और जाहिलों से मुँह मोड़ लो।

या अल्लाह, हमें उस इल्म से निकल जाने से बचाइए जो आपने हमें दिया, और हमें उन में रखिए जो वसवसा आते ही याद कर लेते हैं। आमीन।